

आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 21 March 2022

Website: www.shivbabas.org

धारणा – “आज अपने अंदर दैवी संस्कारों को जागृत करने का भरपूर प्रयास करे, जैसे कि यह संस्कार हमारे अंदर हमेशा से है, ऐसा पुरुषार्थ करना है ”

शिवबाबा हमें मनुष्य से देवता बनाने आये है। हमारे मन को, हमारे बुद्धि को और हमारे संस्कारों को पूरा स्वच्छ करने, उन्हें मूल **स्थिति** पर ले जाने के लिए हमें ज्ञान दे रहे है।

हम पहचानते चले स्वयं को और अपने मन को निर्मल करते चले। **बुद्धि को स्वच्छ** और सदविवेक से भरपूर करते चले। और अपने संस्कारों को बड़ा **सुखदाई**, बड़ा **पवित्र**, और जैसे हमारे संस्कार **सतयुग** में थे वैसे ही बनाते चले।

कईयों के **संस्कार** उनको बहुत परेशान करते है। किसी में काम का संस्कार रहता है तो विषय विकारों के विना रह ही नहीं पाते है। किसी में

क्रोध करने का संस्कार होता है। छोटी-छोटी बातों में भी क्रोध करते रहते हैं।

दूसरों को देखने का **संस्कार**, सदा दूसरों के बारे में सोचने का संस्कार, यानी परचिंतन करने का संस्कार, यह सब **संस्कार अब हमें बदलने है।** हमारे संस्कार तो बहुत डिवाइन हैं।

याद करें अपने उस सुन्दर स्वरूप को, **सतयुगी स्वरूप को।** याद करें अपने **पुज्य स्वरूप को**, जिसमें हम दाता हैं, जिसमें किसी से कुछ लेने की इच्छा हमारे पास नहीं है, केवल देने वाले हैं।

कईयों में मांगने के संस्कार होते हैं। मान शान के पीछे भागने के संस्कार होते हैं। वे कोई भी कर्म तब ही करते हैं जब वहाँ से मान मिलता हो। यदि मान नहीं मिलता तो वो उस सेवा को छोड़ देते हैं।

इन सब संस्कारों का हमें **सम्पूर्ण रूप से त्याग करना है।** तो अपना एक सम्पूर्ण स्वरूप अपने सामने इमर्ज करें। अपने से कुछ दूरी पर एक चित्र बना ले अपना

यह है मेरा सम्पूर्ण स्वरूप .. जिसमें मेरा संस्कार सम्पूर्ण सुखदाई है

विदेही स्थिति के संस्कार .. सम्पूर्ण पावन और निर्मल .. बिल्कुल निश्चिंत ..
जिसमें कोई मैल नहीं .. जिसे कोई चिंता नहीं ... जो बहुत लाइट है .. हल्के
रहने के संस्कार है "

ऐसा अपना स्वरूप सामने बनाये और संकल्प बनाये

" मेरे संस्कार तो यह है .. यह वर्तमान संस्कार मेरे संस्कार नहीं है "

बहुत अच्छी यह मनोवैज्ञानिक विधि है

अपने को ट्रेन्ड करने की

यह जो वर्तमान संस्कार है .. जिनके कारण हम अपने संगठनों में .. अपने
परिवारों में .. या सेवाओं में सफल नहीं हो पाते .. **शान्ति** मय वातावरण नहीं
रख पाते .. उन संस्कारों के लिए .. हम रोज .. कम-से-कम पाँच बार .. यह
फीलिंग दिया करे

" यह मेरे संस्कार नहीं है .. यह तो रावण के संस्कार है .. इन पराये संस्कारों को मैंने अपना कैसे मान लिया .. मैं कैसे कह सकती हूँ कि .. मेरे अंदर बहुत फीलिंग का संस्कार है .. यह संस्कार मेरे अंदर है ही नहीं .. यह तो मायावी संस्कार है .. मेरे संस्कार तो यह है .. जो सामने खड़े है "

ऐसे अपने स्वरूप को देखते हुए अपने को जब बार-बार पावरफूल स्मृति दिलायेंगे

" मेरे संस्कार यह नहीं यह है "

तो संस्कार बदलते जायेंगे। जो ग़लत संस्कार हमारे अंदर आ गये है, क्योंकि

हमने उन्हें रिजेक्ट कर दिया, यह मेरा नहीं है। तो वह मेरा साथ छोड़कर चले जायेंगे। और जिनको हम **एक्सेप्ट** कर लेंगे, यह संस्कार मेरे है, वे संस्कार हमारे अंदर पुनः पुनः भरते जायेंगे।

तो आज सारा दिन अपने **दिव्य संस्कारों को देखेंगे**। विशेष रूप से अपने **भविष्य स्वरूप के नशे में रहेंगे**। मेरा स्वरूप तो यह है। अपने देव स्वरूप को बार-बार इमर्ज करेंगे और बाबा से बुद्धि योग लगायेंगे कि

" बाबा ! आप हमें इतना बड़ा भाग्य देते हो .. हमारे सोये हुए भाग्य को जगाते हो "

आज बाबा से बातें करते रहेंगे, उसे थैंक्स देते रहेंगे और मेहसूस करते रहेंगे कि

" बाबा, सर्वशक्तिमान तो हमारे सिर के ऊपर छत्रछाया है "

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org